

बुजुर्गों की समस्याओं का अध्ययन विशेषकर पारिवारिक, आर्थिक एवं स्वास्थ्य के परिप्रेक्ष्य में



प्रिया तिवारी

प्रवक्ता,
समाजशास्त्र विभाग,
दीनदयाल उपाध्याय, राजकीय
महाविद्यालय,
सैदाबाद, प्रयागराज, उ.प्र.
भारत

सारांश

सामाजीकरण की प्रक्रिया में मानव शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, युवावस्था, प्रौढ़ावस्था को पार करते हुए वृद्धावस्था में कदम रखता है अतः सामाजीकरण की प्रक्रिया का यह अंतिम स्तर है। इस अवस्था में शरीर बहुत कमजोर हो जाता है। वृद्धावस्था में शारीरिक कमजोरी के साथ मानसिक अवस्था भी क्षीण होती जाती है जैसे याददाश्त का कम होना एवं चिड़चिड़ापन होना। कुछ वृद्धों को तो पेंशन मिलती है लेकिन ज्यादातर वृद्ध आर्थिक रूप से अपने परिवार पर निर्भर होते हैं जिसके कारण उनको अनेक कष्ट का सामना करना पड़ता है। परिवार के लोग यदि बुजुर्गों की स्थिति को देखते हुए उनसे प्यार व सम्मानजनक व्यवहार करते हैं तो वृद्धावस्था आराम से गुजर जाती है लेकिन यदि पारिवारिक सदस्य उनको उपेक्षित महसूस करवाते हैं तो यह अवस्था बड़ी कठिन हो जाती है।¹

वृद्धावस्था में जो (शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, पारिवारिक) समस्याएं आती हैं उसका प्रमुख कारण संयुक्त परिवार का टूटना, भौतिकतावाद का बढ़ना, स्वार्थपरता का बढ़ना और धन को व्यक्ति से अधिक महत्व देना आदि है।² परिणामस्वरूप बुजुर्गों को अकेलापन भोगना पड़ता है तथा घर व समाज में वो आदर नहीं मिलता है जिसके वो हकदार हैं।

मुख्य शब्द : वृद्धावस्था, सामाजीकरण, संयुक्त परिवार, बुजुर्ग।

प्रस्तावना

कुमारेन्द्र सिंह सेंगर³ की यह पंक्तियां बुजुर्गों की स्थिति का बड़ा मर्मस्पर्शी वर्णन करती है :-

कल तलक जो थाम कर चले थे
उंगली हमारी
आज वो ही उंगली दिखा रहे हैं
हमें समझकर एक बेकार
नाकारा वस्तु
किसी कोने में

किसी कबाड़खाने में लगा रहे हैं

सेंगर जी की यह पंक्तियां समाज का वह आइना दिखाती हैं जिससे हर दूसरे व्यक्ति को सामना करना पड़ता है।

हमारे समाज में प्राचीन समय से बुजुर्गों को एक सम्मानजनक व ऊँची प्रस्थिति प्राप्त थी लेकिन जैसे-जैसे समाज आधुनिकता की दौड़ में बढ़ रहा है मानव को हर अवस्था में बहुत ज्यादा संघर्ष करना पड़ रहा है। यूँ तो हर अवस्था में आजकल प्रतिस्पर्धा और जिम्मेदारी के कारण राह कठिन है लेकिन वृद्धावस्था तो बहुत ज्यादा तकलीफदेह हो गयी है क्योंकि इस समय बुजुर्ग अपनी समस्याओं के कारण व असक्तता के कारण अपना काम ठीक ढंग से नहीं कर पाते। जिस काम को वे अपनी युवावस्था में मिनटों में निपटाते थे उसी काम को करने में उनको घंटों लग जाते हैं।

जब परिवार संयुक्त हुआ करते थे उस समय बुजुर्गों की स्थिति ठीक थी, मुखिया के रूप में उनका निर्णय सर्वमान्य होता था, धर का हर सदस्य बुजुर्गों का आदर एवं प्यार करता था लेकिन धीरे-धीरे संयुक्त परिवार टूटने लगे और घर के बेटे एवं बेटों के बाहर चले जाने के कारण वृद्ध लोग कई परिवारों में अकेले रह गये हैं। जहाँ कहीं परिवार के लोग संग में रह रहे हैं अत्यधिक व्यस्तता के कारण वह बुजुर्गों को समय नहीं दे पाते जिससे बुजुर्ग लोग काफी अकेलापन महसूस करते हैं।

जहां कहीं बुजुर्ग लोग अकेले रह रहे हैं सुरक्षा की दृष्टि से भी यह ठीक नहीं रहता। वृद्धों के सम्बन्ध में जो हिंसात्मक वारदाते बड़ी हैं यह उसी का परिणाम है।

2011 की जनगणना के अनुसार भारत में वृद्ध का प्रतिशत 8.6 है। स्वास्थ्य सुविधाओं के कारण जीवन प्रत्याशा बढ़ कर 67 वर्ष हुयी है और विश्व सहित भारत में वृद्धों की संख्या बड़ी तेजी से बढ़ी है और उसी रफ्तार से वृद्धों की समस्याएं भी बढ़ रही हैं।

वृद्धावस्था में अनेक बीमारियां लग जाती हैं और शरीर के सभी अंग कमजोर हो जाते हैं। आंखों का कमजोर होना, मोतियाबिंद, डायबटीज, ब्लडप्रेसर, हड्डियों का कमजोर हो जाना, बहरापन, पार्किन्सन, अल्जाइमर, रीढ़ की हड्डी का झुक जाना, गठिया आदि अनेक बीमारियां हैं जो हर दूसरे बुजुर्ग में पायी जाती हैं प्रतिरोधक शक्ति घट जाने के कारण हर समय वृद्ध किसी न किसी समस्याओं से ग्रस्त रहते हैं। परिवार के सदस्यों पर निर्भर रहने के कारण ठीक ढंग से उनका इलाज भी संभव नहीं हो पाता। बुजुर्गों को हर समय अपनी मृत्यु का डर सताता रहता है और दम्पति में एक की मृत्यु होने के बाद दूसरा साथी एकदम टूट जाता है और भावनात्मक रूप से कमजोर पाता है लेकिन उनको ताकत देने के लिये परिवार के पास समय नहीं रहता जिससे बुजुर्गों को वृद्धावस्था नरक के समान अनुभव कराती है।⁴

आर्थिक परतंत्रता वृद्धावस्था में और कष्ट बढ़ाती है कुछ ही वृद्ध आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होते हैं, जबकि ज्यादातर तो हर चीज के लिये परिवार पर निर्भर होते हैं जिसके कारण न तो वह अपनी आवश्यकतानुसार वस्तुएं ले पाते हैं और न ही सम्मानजनक जीवन जी पाते हैं। कदम-कदम पर लोगों द्वारा तिरस्कृत अनुभव करते हैं। घर के छोटे-बच्चे यदि बुजुर्गों से बात करते हैं तो बड़ों द्वारा यह कहा जाता है कि वे उनको बिगाड़ देंगे। नयी पीढ़ी पुरानी पीढ़ी से सामंजस्य नहीं बैठा पाती और तनाव व कलह का वातावरण पैदा हो जाता है जिसकी जिम्मेदारी बुजुर्ग व्यक्ति अपने को मान लेते हैं और अंदर से टूट जाते हैं।

हम लोगों को अगर अपना स्वस्थ समाज व देश निर्माण करना है तो हमें वृद्धों की समस्या को ठीक ढंग से हल करना होगा।

अध्ययन की आवश्यकता

संजय वर्मा 'दृष्टि' की यह कविता 'बुजुर्ग है तो रिश्ते हैं, नाम, पहचान है अगर बुजुर्ग नहीं तो बच्चों की कहानियां बेजान हैं।'⁵ इस अध्ययन की आवश्यकता को बताती है।

वह बुजुर्ग जो अपने समय में किसी न किसी क्षेत्र के महारथी होते हैं वृद्धावस्था में इतना अनुभव लिये अकेले जीते हैं अतः नयी पीढ़ी अगर उनसे कुछ अनुभव लेगी तो बुजुर्गों को अपना अनुभव साझा करने में खुशी महसूस होगी और नई पीढ़ी को समस्या का हल निकालने में आसानी होगी।

आज दुनियां में बड़ी तेजी से वृद्धों की संख्या बढ़ रही है अगर उनकी समस्याओं को समय रहते नहीं सुलझाया गया तो हम एक संकटग्रस्त समाज का निर्माण करेंगे।

अतः इन समस्याओं का हल निकालने के लिये समस्याओं को जानना अत्यन्त आवश्यक है।

अध्ययन का उद्देश्य

जिन हाथों ने हमको उंगली पकड़कर चलना सिखाया, जिस कंधे पर बैठकर हमने जहान की सैर की, जिन लोगों ने हमारी मांगों को बोलने से पहले पूरा कर दिया, जिन्होंने हम लोगों को सुलाने के लिये अपनी नींद भुला दी, जिनकी दुनिया ही हम पर शुरू और हम पर खत्म, उन लोगों की आंखों में आंसू न आये। हमें बुजुर्गों की समस्याओं को समझकर उन समस्याओं को दूर करना होगा।

शोध विधि

प्रस्तुत शोधपत्र में विषय का अवलोकन, साक्षात्कार द्वारा प्राथमिक तथ्यों का तथा अखबारों, पत्र-पत्रिकाओं द्वारा द्वितीयक तथ्यों का संकलन किया गया तथा तथ्यों को समझकर एवं समस्या के विवेचना के बाद उसकी समीक्षा करते हुए निष्कर्ष दिया गया है।

निष्कर्ष

निशा माधुर ने जिस तरह से यह लिखा है –
जब ये एहतराम होता है कि

कोई हमारा साथी, रहनुमा भी नहीं
खुशियों की जिन्दगी में तब, फलसफे बन
जाते हैं, हमारे बुजुर्ग⁶

इस शोधपत्र में हमने पाया कि वृद्धों को अनेक तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है शारीरिक, मानसिक, आर्थिक तथा पारिवारिक समस्याओं के कारण बुजुर्ग कठिन जीवन जी रहे हैं।

इन समस्याओं को दूर करने के लिये हमें निम्न प्रयास करने होंगे जैसे परिवार एवं समाज को वृद्धों के हित के लिये आगे आना होगा अगर कोई परिवार ऐसा नहीं कर रहा तो उसके खिलाफ कार्रवाई करनी होगी। हम लोगों को कोई भी कार्य करना हो तो हमें बुजुर्गों की राय लेनी होगी और कार्य में भागीदार बनाना पड़ेगा। उनके स्वास्थ्य का नियमित समयान्तराल में परीक्षण कराकर उनको स्वस्थ रखने का प्रयास करना होगा।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 41 के अनुसार "राज्य अपनी आर्थिक क्षमता एवं विकास को ध्यान में रखते हुये वृद्धजनों हेतु सरकारी सहायता का अधिकार सुनिश्चित करेंगे।⁷ हमारे संविधान में अनुच्छेद 14 के अनुसार समानता का अधिकार है जो बुजुर्गों पर पूरी तरह से लागू होता है। सरकार द्वारा बुजुर्गों को आर्थिक सुरक्षा दी जानी चाहिए। वृद्ध लोगों की स्वास्थ्य सम्बन्धी आवश्यकताओं को प्राथमिकता देना चाहिए। वृद्ध व्यक्तियों को जनसंचार माध्यमों के साथ अनौपचारिक एवं पारम्परिक संचार माध्यमों का सहयोग प्राप्त कराना होगा।⁸

इस तरह वृद्धों की समस्या को दूर करके ही हम स्वस्थ परिवार, स्वस्थ समुदाय तथा स्वस्थ समाज का निर्माण कर पायेंगे।

अंत टिप्पणी

1. रानी वन्दना : "वृद्धों की पारिवारिक स्थिति" चिन्तन परम्परा सामाजिक विज्ञानों की शोध पत्रिका (अर्द्धवार्षिक), वर्ष-1, अंक-1, जनवरी-जून 1999

2. सुधा एस सिलावत : द प्रॉब्लम्स ऑफ एजेड, 1995
पृष्ठ 12-14
3. कुमारेन्द्र सिंह सेंगर, <http://hindi.webdunia.com>
पृष्ठ 12-14
4. राजौरिथा सीमा : वृद्धजनों की स्वास्थ्य समस्याएं एक
अध्ययन : 1988 पृष्ठ 138-139
5. संजय वर्मा दृष्टि, <http://hindiwebdunia.com>
6. निशा माथुर, <http://hindiwebdunia.com>
7. पचौरी जे0पी0, वृद्धावस्था : एक सामाजिक विवेचन,
समाज कल्याण, वर्ष-37, अंक-7, फरवरी 1992, नई
दिल्ली
8. सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय